Solution of Practice Paper - 2

Class 12

Sub - Political Science (028)

Time : 3 hrs. **MM.: 80**

1. वामपंथी पार्टियां मार्क्सवाद ,माओवाद तथा समाजवाद में विश्वास रखती है गरीबों के उत्थान और सामाजिक बदलाव की राजनीति मसलन भूमि सुधार, विकेंद्रीकरण को बढ़ावा देने वाली आर्थिक नीतियां और स्थानीय सरकारों को सशक्त बनाने के मुद्दे पर वामपंथी दलों ने भारत की राजनीति पर हमेशा महत्वपूर्ण असर डाला है. 1
2. क्यूबा मिसाइल संकट से संबंधित वर्ष - 1962 है। 1
3. सोवियत संघ के विघटन से सम्बंधित सही तिथि । 1

   iv) 25 दिसंबर 1991

4. ग्लास्नोस्त एक रुसी शब्द है जिसका अर्थ है ,खुलापन की निति। 1
5. रूस के पहले निर्वाचित राष्ट्रपति का नाम बोरिस येल्तसिन । 1
6. प्रथम खाड़ी युद्ध (1990). 1
7. अरब क्रांति। 1
8. संयुक्त राष्ट्र संघ का मुख्यालय - न्यूयॉर्क है। 1
9. गलत। सुरक्षा परिषद के अस्थायी सदस्यों की संख्या 10 है. 1
10. विश्व के देशों के लिए वैश्विक व्यापार के नियमों को तय करता है। 1
11. GDP - सकल घरेलू उत्पाद। 1
12. नीति आयोग का गठन 1 जनवरी 2015 को केंद्रीय मंत्रिमंडल के एक प्रस्ताव के माध्यम से किया गया. 1
13. राष्ट्रीय विकास परिषद_की स्थापना का वर्ष । 1

   ii) 1952

14. गलत। 1

15. U.P.A - I सरकार में प्रधानमंत्री डॉक्टर मनमोहन सिंह जी थे । 1

16. श्री नरेंद्र मोदी जी। 1

17. (1+1+1+1=4)

17.1 c) 2009 1

17.2 d) उपरोक्त सभी 1

17.3 a) ट्यूनीशिया 1

17.4 a) होस्नी मुबारक 1

18. (1+1+1+1=4)

18.1 d) a) और b) दोनों सही। 1

18.2 a) 1998 1

18.3 d) उपरोक्तसभी 1

18.4 c) अमेरिका,रूस,ब्रिटेन,फ्रांस,चीन

19. दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन। इसमें शामिल देश है:- 2

भारत , पाकिस्तान , नेपाल , भूटान , बांग्लादेश , श्रीलंका , मालद्वीप

तथा अफगानिस्तान। अफगानिस्तान इसका संस्थापक सदस्य नहीं है। वह इसमें बाद में शामिल हुआ है।

20. एक कानूनी दस्तावेज जो ब्रिटिश सर्वोपरिता के अंतर्गत प्रत्येक रियासत के शासक को ब्रिटिश भारत के बंटवारे से बने 'भारत' या 'पाकिस्तान' किसी एक में शामिल होने के लिए सक्षम करता था। 2

21. वास्तव में तीसरा लोकतांत्रिक अभ्युत्थान एक प्रतिस्पर्धी चुनावी बाजार का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि इसमें 1. राज्य से बाजार 2. सरकार से शासन और 3. राज्य नियंत्रण के रूप में अर्थात सुविधाएं प्रदान करता है। अर्थात सर्वश्रेष्ठ के अस्तित्व के सिद्धांत पर आधारित नहीं है अपितु योग्यतम के अस्तित्व पर आधारित है। 2

22. (1) मानसून की असफलता --- जिसके कारण सूखे की स्थिति पैदा हो गई और देश को गंभीर खाद्य संकट का सामना करना पड़ा।

(2) भारत - चीन युद्ध (१९६२) व भारत - पाकिस्तान युद्ध (१९६५) भी इसी दौरान देश को झेलना पड़ा। 2

अथवा

ब्राजील , रूस , भारत , चीन व दक्षिण अफ्रीका।

23. शीत युद्ध के दायरे- (4∗1=4)

1. कोरिया संकट- द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में कोरिया जापान से स्वतंत्र हुआ। लेकिन उत्तरी कोरिया को चीन और सोवियत संघ का समर्थन प्राप्त था और दक्षिण कोरिया को पश्चिमी देशों का। सुरक्षा परिषद् में USSR के विरुद्ध कार्यवाही में दोनों महाशक्तियों के बीच 1950 -53 युद्ध चला और कोरिया दो भागों उत्तरी और दक्षिणी कोरिया में विभाजित हो गए।
2. बर्लिन संकट- जर्मनी की राजधानी, बर्लिन में सोवियत संघ और अमेरिकी समूह (पश्चिमी देशों का समूह) की सेनाएं आमने सामने थी। परिणामस्वरूप जर्मनी का दो देशों- पूर्वी जर्मनी और पश्चिमी जर्मनी में विभाजन हो गया। 1961 में तो दोनों देशो के बीच दीवार बना कर तनाव को ख़त्म करने का प्रयास किया गया।
3. कांगो संकट- 1960 के दशक की शुरुआत में कांगो बेल्जियम से आज़ाद हुआ। बेल्जियम ने अपने नागरिकों की रक्षा का तर्क देकर कांगो में सैन्य हस्तक्षेप

कर दिया। कांगो सरकार की माँग पर संयुक्त राष्ट्र की सेनाओं द्वारा स्थिति को संभालने का प्रयास किया गया।

4. क्यूबा मिसाइल संकट- 1962 में, USSR ने क्यूबा में परमाणु मिसाइलें लगाई जो USA के लिए सीधे तौर पर खतरा थी। अमेरिकी युद्धपोत क्यूबा की ओर बढ़ रहे सोवियत संघ के जहाज को अटलांटिक महासागर में रोकते हैं। क्यूबा मिसाइल संकट के रूप में जाना जाने वाला यह टकराव एक युद्ध का रूप ले सकता था लेकिन दोनों की सूझबूझ से ऐसा नहीं हुआ।

   (या कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु) कोई चार बिंदु

24. जयप्रकाश नारायण की 'संपूर्ण क्रांति'- 4∗1=4

1. जनता की शक्ति- सत्ता में आसीन नेताओं को जनता की शक्ति दिखाना चाहते थे तथा जनता को भी लोकतंत्र में उनकी ताकत से अवगत कराना चाहते थे। उन्होंने लोगों को संगठित करने और स्थितियों के बारे में जागरूक करने की कोशिश की और फिर नेताओं से अपील की।
2. शांतिपूर्ण आंदोलन- वे गांधीवादी विचारधारा से बहुत अधिक प्रभावित थे इसलिए जनता से उन्होंने शांतिपूर्ण तरीके से आंदोलन करने का आवाहन किया।
3. सम्पूर्ण क्रांति-संपूर्ण सरकारी ढांचे और भारतीय राजव्यवस्था में पूर्ण परिवर्तन लाना ही इस क्रांति का उद्देश्य था तथा JP की सम्पूर्ण क्रांति, सात क्रांतियों का एक संयोजन है, अर्थात, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, वैचारिक या बौद्धिक, शैक्षिक और आध्यात्मिक; और सर्वोदय के आदर्शों के साथ मौजूदा समाज में बदलाव लाना मुख्य उद्देश्य था।
4. वास्तविक लोकतंत्र के लिए- जेपी के अनुसार जीवन के सभी क्षेत्रों में व्यापक भ्रष्टाचार के कारण भारत में विकास की कमी थी। तत्कालीन सरकार लोगों को बेहतर जीवन देने में भी असमर्थ थी। (या कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु)

25. वैश्वीकरण का भारत पर प्रभाव :- 4∗1=4

1. राजनीतिक प्रभाव- सरकार की कल्याणकारी भूमिका में कमी आई है। बाज़ार व्यवस्था के तहत सरकार का काम अब केवल नियंत्रक मात्र रह गया है।
2. संसाधनों पर दबाव- उत्पादन के क्षेत्र में बहुत सारी कंपनियों के आने से संसाधनों पर दबाव बढ़ा है। अब छोटी-बड़ी सभी वस्तुओं के उत्पादों की विविधता से बाज़ार भरा हुआ है। इन सब के उत्पादन में कच्चा माल, बिजली, पानी, जैसे संसाधनों का प्रयोग भी अधिक मात्रा में हो रहा है।
3. लघु एवं कुटीर उद्‌योगों को खतरा- वैश्वीकरण से विश्व के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था के मार्ग खुल गए है। माइक्रोसॉफ्ट, नेस्ले, एप्पल इंक, जैसी अनेक बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ भारत के स्वदेशी उत्पादकों को प्रतियोगिता दे रही है। इससे लघु एवं कुटीर उद्‌योगों का पतन हो रहा है।
4. सांस्कृतिक प्रभाव- पश्चिमी उत्पादों के आने से युवा वर्ग उनकी ओर आकर्षित हो रहे है। उनके प्रचार के लिए जो विज्ञापन विभिन्न माध्यमों के द्‌वारा प्रसारित किए जाते है उनमें पश्चिमी संस्कृति का रंग होता है। जिससे विशेषतया बच्चे एवं युवा बहुत अधिक प्रभावित होते है।

(या कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु)

26. विश्व व्यापार संगठन- विश्व व्यापार संगठन, WTO, विश्व व्यापार के नियमों को तय करता है। इसकी स्थापना 1995 में हुई। यह संगठन 'जनरल अग्रीमेंट ऑफ ट्रेड एंड टैरिफ' के उत्तराधिकारी के रूप में हुई। वर्तमान में इसके सदस्यों की संख्या 164 है। अंतिम सदस्य देश लीबिया और अफगानिस्तान, 2016 में इसमें शामिल हुए।

एमनेस्टी इंटरनेशनल- एमनेस्टी इंटरनेशनल, एक अंतरराष्ट्रीय स्वयं सेवी संस्था, NGO(Non-Governmental Organisation) है। यह सम्पूर्ण विश्व में

मानवाधिकारों की रक्षा के लिए अभियान चलाता है। यह संगठन मानवाधिकारों से जुड़ी रिपोर्ट तैयार और प्रकाशित करता है। इसका ज्यादा ध्यान सरकारों द्वारा किए जा रहे दुर्व्यवहार पर होता है इसलिए अक्सर सरकारें इनकी रिपोर्ट को पसंद नहीं करती। 2+2=4

अथवा

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भारत के रुख का मूल्यांकन-

1. UNSC का पुनर्गठन- भारत तथा अन्य अनेक देशों का मानना है कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, UNSC, को अधिक लोकतांत्रिक बनाने की आवश्यकता है। इसके लिए इसका नए ढंग से गठन करने की आवश्यकता है।
2. सदस्य संख्या में वृद्धि- UNSC का पिछले कुछ वर्षों में कामकाज का विस्तार हुआ है तथा आमसभा में सदस्यों की संख्या में वृद्धि हुई है। अतः भारत जैसे देशों की मांग है कि UNSC में सदस्य संख्या में वृद्धि की जानी चाहिए।
3. प्रतिनिधि मूलक बनाना-भारत तथा अन्य अनेक देश, यह मानते हैं कि UNSC में विश्व के सभी महाद्वीपों का प्रतिनिधित्व नहीं हुआ है। इसे प्रतिनिधि मूलक बनाने के लिए दक्षिण गोलार्द्ध से भी कुछ देशों को शामिल किया जाए।
4. स्थायी सदस्यता की दावेदारी- भारत स्वयं UNSC की स्थायी सदस्यता का दावा प्रस्तुत करता है। भारत, एक बड़ा लोकतांत्रिक देश है तथा UNO की सदस्यता के नए नियमों के अनुसार भारत उस पर खरा उतरता है।

(या कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु)

27. 1977 की मई में जनता पार्टी की सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश J C शाह की अध्यक्षता में एक आयोग गठित किया जिसे शाह आयोग कहा जाता है 'शाह आयोग' के उपलब्धियां -

1. निवारक नज़रबंदी का अति प्रयोग- आपातकाल के दौरान सरकार के द्वारा निवारक नज़रबंदी प्रावधान का अति प्रयोग किया गया। एक लाख से अधिक लोगों को, जिसमें अन्य राजनीतिक दलों के नेता भी थे, बिना कोई कारण बताए गिरफ्तार किया गया।
2. प्रेस की बिजली काटना- 26 जून, 1975 को मौखिक आदेश पर प्रेस की बिजली काट दी गई और 2-3 तक सैंसरशिप लागू करने के बाद ही बहाल की गई। जिससे कोई भी समाचार पत्र नहीं छपा।
3. प्रेस पर पाबंदी- सैंसरशिप व्यवस्था होने से कोई भी समाचार सैंसरशिप बोर्ड को दिखाना अनिवार्य था। बोर्ड द्वारा समाचारों में छटाई करके छापने की अनुमति मिलती थी।
4. सरकारी शक्ति का दुरुपयोग- संजय गांधी, तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के पुत्र, द्वारा सरकारी कामकाज में अत्यंत हस्तक्षेप किया गया। झुग्गी झोपडियों का विस्थापन हो या परिवार नियोजन कार्यक्रम, ऐसे अनेक कार्यों में उनका दखल था जबकि वे सरकार में किसी आधिकारिक पद पर नहीं थे।
5. परिवार नियोजन कार्यक्रम- आपातकाल के समय परिवार नियोजन कार्यक्रम को बहुत सख्ती से लागू किया गया। जो कि पूर्ण रूप से निजता के अधिकार का उल्लंघन है।

(या कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु) 4*1=4

अथवा

आपातकालीन प्रावधान में संशोधन-

1. 1975, अनुच्छेद 352 में 'अंदरूनी गड़बड़' के आधार पर आपातकाल के प्रावधान का दुरुपयोग किया गया। आपातकाल हटते ही जनता के प्रतिनिधियों ने इस व्यवस्था में संशोधन किया। अब 'अंदरूनी गड़बड़' के स्थान पर केवल 'सशस्त्र विद्रोह' की स्थिति में ही आपातकाल लगाया जा सकेगा।

2. राष्ट्रपति को लिखित ज्ञापन- जून, 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा राष्ट्रपति को मौखिक सुझाव दिया गया था और तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद जी ने तत्काल ही आपातकाल की घोषणा कर दी। आपातकालीन प्रावधान में जटिलता लाने के लिए संसद ने यह आवश्यक कर दिया कि मंत्रिपरिषद (सामुहिक निर्णय) की ओर से राष्ट्रपति को लिखित ज्ञापन दिया जाना चाहिए।
3. अधिकारों के प्रति जागरूकता बड़ी- आपातकाल के दौरान जनता के अधिकार निलंबित कर दिए गए थे। अधिकारों की अनुपस्थिति से जनता ने उनकी उपयोगिता को महसूस किया। संविधान में उनका प्रावधान किस प्रकार किया गया है, इसके प्रति जनता अधिक जागरूक हो गई।

(या कोई अन्य प्रासंगिक बिंदु) 4*1=4

28.

प्रयोग की गई जानकारी की क्रम संख्या	**संबंधित अक्षर**	**राज्य का नाम**
1)	C	पंजाब
2)	E	बिहार
3)	A	तमिलनाडु
4)	B	उत्तरप्रदेश
5)	D	पश्चिम बंगाल

दृष्टिबाधित छात्रों के लिए:- **5*1=5**

1. 15 अगस्त 1947
2. जम्मू कश्मीर
3. भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी
4. सी राजगोपालाचारी
5. 1885

29(i) श्रीलंका । 1

29(ii) शेर= बहुसंख्यक सिंहली समुदाय का प्रतिनिधित्व ।

बाघ= अल्पसंख्यक तमिल समुदाय का प्रतिनिधित्व । 2

29(iii) कार्टून में दिखाए गए व्यक्ति राजपक्षे हैं । बहुसंख्यक सिंहली समुदाय तथा अल्पसंख्यक तमिल समुदाय के बीच संतुलन बैठाने का प्रयास कर रहे हैं । वे दोनों समुदायो में समझौता कराकर देश में शांति बहाल करने का प्रयास करते हुए नजर आ रहे हैं । **2**

केवल दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए

29.1 श्रीलंका । 1

29.2 लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम । 2

29.3 उत्तर पूर्वी श्रीलंकाई क्षेत्र को तमिलों के लिए स्वतंत्र देश की मांग । उन्होंने मांग की कि तमिलों को सिंहली समुदाय के समान बराबरी का दर्जा दिया जाए । 2

30. यह कथन सही है कि क्षेत्रीय आर्थिक संगठन की स्थापना और मजबूती में देशों की शांति और समृद्धि निहित है। यह कथन आसियान क्षेत्रीय मंच और यूरोपीय संघ का प्रतिनिधित्व करता है, जहां आसियान क्षेत्रीय मंच सशस्त्र टकराव में क्षेत्रीय विवादों को आगे बढ़ाने की धारणा पर आधारित है।

आसियान तेजी से एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय संगठन के रूप में विकसित हो रहा है। इसके विजन 2020 ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में एक बाहरी दिखने वाली भूमिका को परिभाषित किया है। यह क्षेत्र में संघर्षों पर बातचीत को प्रोत्साहित करने के लिए मौजूदा आसियान नीति पर बनाता है। इस प्रकार, आसियान ने कंबोडियाई संघर्षों, पूर्वी तिमोर संकट के अंत की मध्यस्थता की है, और पूर्वी एशियाई सहयोग पर चर्चा करने के लिए सालाना बैठक करता है। आसियान क्षेत्रीय मंच (ARF) सुरक्षा और विदेश नीति के समन्वय को बनाए रखता है।

यूरोपीय संघ को आम विदेशी और यूरोपीय संघ की सुरक्षा नीति, न्याय और घर के मामलों पर सहयोग के आधार पर भी वित्त पोषित किया गया है। यूरोपीय संघ ने भी नए सदस्यों का अधिग्रहण करते हुए सहयोग बढ़ाया है, खासकर सोवियत ब्लॉक से। 6

अथवा

चीन और भारत के बीच विवादास्पद मुद्दे नीचे दिए गए हैं: चीन के साथ संबंध भारत के अनुकूल इशारों का अनुभव करते हैं क्योंकि भारत ने I954 में भारत-चीन संबंधों को विकसित करने के लिए लोकप्रिय 'पंचशील' पर हस्ताक्षर किए और संयुक्त राष्ट्र में चीन की सदस्यता की वकालत की। फिर भी, 1957 के बाद, भारत-चीन संबंधों में विभिन्न विवादास्पद मुद्दे सामने आए:- 3+3=6

1962 में अरुणाचल प्रदेश और लद्दाख के अक्साई चिन क्षेत्र में क्षेत्रीय दावों के लिए प्रतिस्पर्धा पर सीमा संघर्ष।

- 1950 में तिब्बत के चीनी अधिग्रहण, और चीन-भारतीय सीमा के अंतिम समझौते से मतभेद उत्पन्न हुए।
- पंचशील के बाद, 1962 में भारत पर चीन द्वारा हमला, भारत के बड़े क्षेत्रों पर कब्जा करने के लिए, अपमानित किया गया।
- पाकिस्तान के परमाणु कार्यक्रम में चीन की सहायता ने भी मतभेद पैदा किए।

- बांग्लादेश और म्यांमार के साथ चीन के सैन्य संबंधों को भारतीय हितों के प्रतिकूल माना गया।

विवादों को सुलझाने के लिए सुझाव:-

- उपरोक्त सभी मतभेदों / विवादों को अधिक सहयोग के लिए हल किया जा सकता है-
- दोनों देशों को अपने बीच सामंजस्यपूर्ण रवैये को पुनर्जीवित करने के लिए कुछ और प्रयास करने चाहिए।
- दोनों देशों को आतंकवाद, परमाणु दौड़ और आर्थिक असमानताओं के खिलाफ लड़ने के लिए हाथों-हाथ आगे बढ़ना चाहिए।
- दोनों देशों को समझ और सम्मान विकसित करना चाहिए।
- इसलिए, दोनों ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विज्ञान और प्रौद्योगिकी में सहयोग पर समझौते किए हैं ।

अथवा

31 चुनावी राजनीति के पहले दशक में भारत में एक मान्यता प्राप्त विपक्षी दल नहीं थे । लेकिन गैर-कांग्रेसी दलों के रूप में 1952 के पहले आम चुनाव से पहले कुछ जीवंत और विविध विपक्षी दल अस्तित्व में आ गए थे। इसलिए, आज की लगभग सभी गैर-कांग्रेसी पार्टियों की जड़ों का पता 1950 की विपक्षी पार्टियों के एक या दूसरे पक्ष से लगाया जा सक**ता है।**

इन सभी विपक्षी दलों ने केवल एक प्रतिनिधित्व प्राप्त किया, बल्कि उनकी उपस्थिति ने लोकतांत्रिक व्यवस्था के चरित्र को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसलिए निम्नलिखित कारणों से सफल लोकतंत्र के लिए दो पार्टी प्रणाली की आवश्यकता होती है:-

दो पार्टी प्रणालियों के भीतर, विपक्षी पार्टी सत्तारूढ़ पार्टी की नीतियों और व्यवहारों की निरंतर आलोचना करती है और इसे सख्त जांच के दायरे में रखती है।लोकतांत्रिक

राजनीतिक विकल्प को जीवित रखकर, इन दलों ने व्यवस्था के साथ आक्रोश को लोकतांत्रिक विरोधी होने से रोक दिया। उपर्युक्त सुविधाओं के आधार पर, दो पार्टी प्रणाली के निम्नलिखित लाभ हैं:

1. भारत अधिक प्रतिस्पर्धी राजनीति में आ गया है।

2. राजनीतिक दल आम सहमति के क्षेत्र में कार्य करते हैं।

3. नए रूपों, दृष्टि, विकास के मार्गों की पहचान की गई है।

4. गरीबी, विस्थापन, न्यूनतम मजदूरी, आजीविका और सामाजिक सुरक्षा जैसे मुद्दों को राजनीतिक एजेंडे पर रखा जा रहा है।

अथवा

गंभीर प्रतिस्पर्धा और कई संघर्षों के बीच ज्यादातर दलों के बीच आम सहमति बनकर उभरी प्रतीत होती है ।1989 से भारतीय राजनीति किन्हीं चार प्रमुख घटनाक्रम
(i) नई आर्थिक नीतियों पर समझौता- जहां कई समूह नई आर्थिक नीतियों के खिलाफ हैं, वहीं ज्यादातर राजनीतिक दल नई आर्थिक नीतियों के समर्थन में हैं। ज्यादातर दलों का मानना है कि ये नीतियां देश को समृद्धि और दुनिया में आर्थिक शक्ति की स्थिति की ओर ले जाएंगी ।
(ii) पिछड़ी जातियों के राजनीतिक और सामाजिक दावों को स्वीकार करना:
राजनीतिक दलों ने पिछड़ी जातियों के सामाजिक और राजनीतिक दावों को स्वीकार करने की जरूरत है। नतीजतन, सभी राजनीतिक दल अब शिक्षा और रोजगार में पिछड़े वर्गों के लिए सीटों के आरक्षण का समर्थन करते हैं । राजनीतिक दल भी यह सुनिश्चित करने के लिए तैयार हैं कि ओबीसी को सत्ता का पर्याप्त हिस्सा मिले।
3 देश के शासन में राज्य स्तरीय दलों की भूमिका को स्वीकार करना राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर के दलों के बीच अंतर तेजी से कम महत्वपूर्ण होता जा रहा है । राज्य

स्तरीय पार्टियां राष्ट्रीय स्तर पर ताकत दिखा रही हैं और पिछले बीस साल की देश की राजनीति में केंद्रीय भूमिका निभा चुकी हैं।

4 गठबंधन की राजनीति ने राजनीतिक दलों का ध्यान तार्किक मतभेदों से हटकर सत्ता के बंटवारे की व्यवस्थाओं पर पहुंचा दिया है। इस तरह एनडीए के ज्यादातर दल भाजपा की 'हिंदुत्व' विचारधारा से सहमत नहीं थे। फिर भी, वे एक साथ एक शासन बनाने के लिए आए और एक पूर्ण कार्यकाल के लिए सत्ता में बने रहे ।

32. स्वतंत्र भारत को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया के दौरान कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिन्हें निम्नानुसार अभिव्यक्त किया जा सकता है:

1. एक राष्ट्र को आकार देने की चुनौती: भारत आजादी के समय विभिन्न राज्यों में विभाजित था। इसलिए एक बंधन में देश को एकजुट करने और एकीकृत करने के लिए एक बड़ी चुनौती पैदा हुई। सरदार वल्लभभाई पटेल ने इन राज्यों को या तो इच्छा से एकीकृत करने का बीड़ा उठाया।

2. लोकतांत्रिक व्यवस्था स्थापित करना: भारत ने सरकार के संसदीय स्वरूप के आधार पर प्रतिनिधि लोकतंत्र का गठन किया और राष्ट्र में इन लोकतांत्रिक प्रथाओं को विकसित करना एक बड़ी चुनौती थी।

3. समाज के विकास और कल्याण को सुनिश्चित करना: प्रभावी आर्थिक नीतियों के विकास और गरीबी और बेरोजगारी के उन्मूलन के साथ कल्याण लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भारतीय राजनीति ने खुद को बनाया। 6

अथवा

राष्ट्र निर्माण के दौरान रियासतों के एकीकरण में कई कठिनाइयां थीं:- 6

1 भारत पर अपने शासन के अंत के साथ रियासतों पर सर्वोपरिता ।

2. ब्रिटिश सरकार ने यह विचार रखा कि ये सभी राज्य या तो भारत या पाकिस्तान में शामिल होने या जानबूझकर स्वतंत्र रहने के लिए स्वतंत्र हैं । यह राष्ट्र की एकता के लिए बाधक बन गया।

3. त्रावणकोर के शासक ने राज्यों को एक स्वतंत्र घोषित किया।

4. हैदराबाद और भोपाल के निजाम ने भी त्रावणकोर का अनुसरण किया।

5. इन प्रतिक्रियाओं ने एकता और लोकतंत्र के स्थान पर देश के विभाजन की संभावना पैदा कर दी ।

6 हैदराबाद भारत की सबसे बड़ी रियासत थी। दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति में से एक निजाम चाहते थे कि हैदराबाद स्वतंत्र राज्य हो।

****